Answer Book – જવાબવહી

મુખ્ય જવાબવહી	પુરવણી	કુલ
1	+ 1	= 2

H.S.C. વિજ્ઞાન પ્રવાહ 24-M-24

વિષય અને કોડ નંબર	જીવવિજ્ઞાન	056
પરીક્ષાની તારીખ	15/03/2023	
જવાબની ભાષા	Hindi	

પરીક્ષાર્થી માટે અગત્યની ... ઉપયોગ માટે

પરીક્ષાર્થીએ જવાબ લખવાનું શરૂ કરતાં પહેલાં પાન નં. 2 પરની સૂચનાઓ અવશ્ય વાંચવી.

G.S. & H.S.E.B. 318 C.E.C. 2024

વિભાગ	પરીક્ષકે આપેલ ગુણ	પરીક્ષકની સહી	પરીક્ષકની નિમણૂક નંબર	સમીક્ષકે આપેલ ગુણ	કો-ઓર્ડિનેટરે આપેલ ગુણ	બોર્ડની કચેરીના ઉપયોગ માટે
A						
B						
C						
કુલ ગુણ અપૂર્ણાંકમાં						
કુલ ગુણ પૂર્ણાંકમાં						
કુલ ગુણ શબ્દોમાં						

વેરીફાયરની સહી	સમીક્ષકની સહી	કો-ઓર્ડિનેટરની સહી
વેરીફાયરનો નિમણૂક નંબર	સમીક્ષકનો નિમણૂક નંબર	કો-ઓર્ડિનેટરનો નિમણૂક નંબર

Visit CollegeDekho

ગુણાંકન

[redacted]

વિભાગ-A

પ્રશ્ન ક્રમાંક	ગુણ
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
મેળવેલ કુલ ગુણ	16

પરીક્ષકની સહી

વિભાગ-B

પ્રશ્ન ક્રમાંક	ગુણ	
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
		18

પરીક્ષકની સહી

વિભાગ-C

પ્રશ્ન ક્રમાંક	ગુણ	
22		
23		
24		
25		
26		
27		
મેળવેલ કુલ ગુણ		16

પરીક્ષકની સહી

વેરીફાયરની સહી

વિભાગ : A + B + C =	50

પેજ નં. 3 ઉપરના પ્રશ્નના ક્રમવાર મેળવેલ ગુણ મૂકીને મહત્તમ ગુણ ગણતરીમાં લઈ વિભાગવાર દર્શાવવાના રહેશે અને ઉત્તરવહીના મુખ્ય પેજ ઉપર વિભાગવાર ગુણ લખવાના રહેશે.

Visit CollegeDekho

Section- A

2) कोई भी रोग जो मैथुन के समय फैलता हो उसे हम यौन संचारित रोग कहते है।
इससे बचने की निम्न साधारण उपाय है।

i) किसी भी अजान व्यक्ति के साथ मैथुन न करें।

(ii) हमेशा मैथुन के समय कण्डोम का उपयोग करें।

(iii) यदि आपको कोई अशंका हो तो प्रारंभिक जाँच के लिए तुरंत डाक्टर से मिले।

(iv) अपने चारो तरफ सुरक्षा अथवा सफाई रखें

15- 24 वर्ष की आयु वाले लोगो मे यह फैलने के अधिक चांस होता है।

(3) फिनाइल किटुनिया एक अलिंग अप्रभावी विकार है।
जिसके परिणाम स्वरूप फेनिल एनीलिन की टायरोसिन मे बदलने वाले एंजाइम की कमी के कारण होता है।
यह एंजाइम फेनिल एलेनिल हाइड्रोक्सीलेज की कमी के कारण होता है।
शरिर मे फेनिल एनेलिल पारुवीक अम्ल मे बदलता जाता है। और इस कारण मानसिक मंदक बालो का भरना होता है।

Visit CollegeDekho

तथा मूत्र वृक्क द्वारा को अवशोषीत होने के कारण मूत्र द्वारा उत्सर्जीत होता है।

(6) विनिवर्तन जिसमे यदि कोई व्यक्ति ड्रग एल्कोहल को लेता है तो उसके द्वारा ड्रग एल्कोहल की मात्रा को बंद कर देने के कारण जो लक्षण उत्पन्न होते है उसे हम विनिवर्तन कहा जाता है।
परिणाम स्वरूप व्यक्ति के कपनं होना, गुस्सा आना, ठंडा, बुखार इत्यादि लक्षण उसे द्वारा प्रकट किया जाता है।
यदि इसकी तुरंत लक्ष ड्रग देने के बाद ये लक्षण बंद हो जाते है।
व्यक्ति को मिचमीची होना कापना इत्यादि विवर्तन के लक्षण को व्यक्त करने लगता है।

(7) सर्वप्रथम एंटीबायोटिक की खोज एक प्रकार का हादसा है।
जब एलेकजेंडर कुछ स्टैफिलोकोकस बेक्टिरिया पर कार्य कर रहे थे तो उनमे से कुछ पर मोल्ड उत्पन्न हो गया था
मोल्ड जो एक बैक्टीरिया स्टैफिलोकोकस है।

Visit CollegeDekho

6

जिस कारण यह वृद्धि नही कर सका
क्योकी यह मोल्ड पैनिसिलीन द्वारा उत्पन्न रसायन पैनिसिलियम के कारण हुआ था
अतः बाद मे इसको एक एंटीबायोटिक के रूप मे माना गया था।
इस प्रकार पैनीसिल कवक के द्वारा उत्पन्न पैनिसिलिय के कारण मोल्ड वृद्धि नही कर सका

(7) सकल की कुल प्राथमिक उत्पादकता मे पादप के द्वारा प्रकाश सश्लेषण द्वारा उत्पन्न की गई कार्बनिक पदार्थ की मात्रा को सकल की कुल उत्पादकता कहा जाता है।
तथा इस सकल की कुल उत्पादक मे से पादपो द्वारा कुछ भाग श्वसन की क्रिया मे नष्ट हो जाती है।
अतः सकल की कुल उत्पादक मे से श्वसन की मात्रा को घटाने के पश्चात प्राप्त मात्रा को नेट कुल उत्पादकता कहा जाता है।

GPP – R = NPP

Visit CollegeDekho

(10)

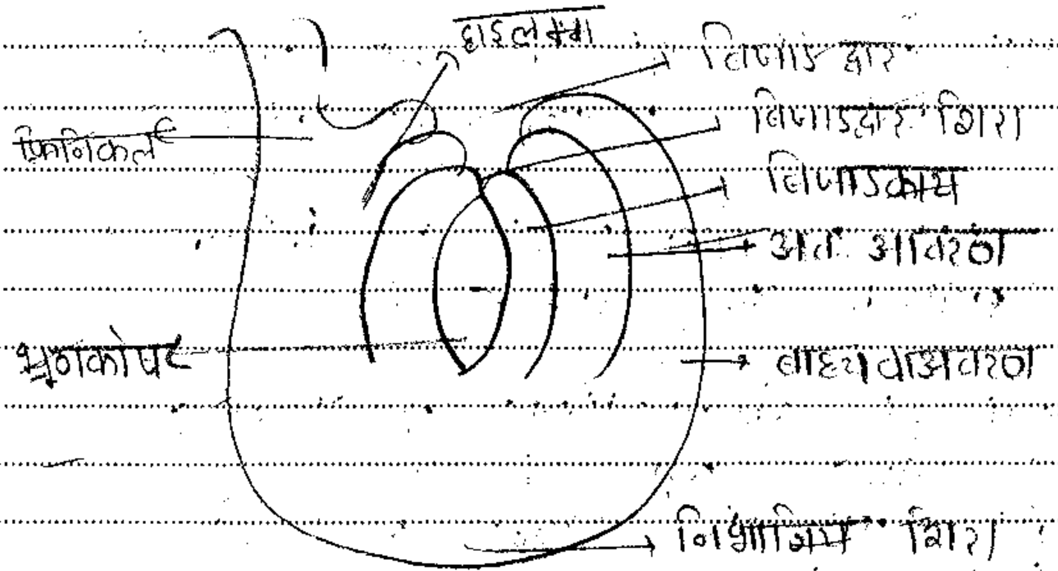

एक प्ररूपी बिजांड मे बाह्यआवरण, अंत: आवरण निभागीय शिरा, बिजाण्डकाय उपस्थित होता है।

(11) चिकित्सीय सगर्भता का समापन कुछ विशेष मामलो मे आवश्यक होता है।

(i) जब कभी अनचाही सगर्भता से मुक्ती पाना तब इसका उपयोग किया जा सकता है।

(ii) बलतकार जैसी घटनाओ मे भी चिकित्सीय सगर्भता का समापन करवाया जा सकता है।

(iii) इसके अलावा यदि गर्भ निरोधक गोलिया लेने पर असफल हो जाने पर चिकित्सीय सगर्भता का समापन करा सकते है।

(iv) यदि किसी विशेष मामले जहा माता तथा गर्भ दोनो के जीवन का

Visit CollegeDekho

8

प्रश्न क्रमांक

खतरा हो तो भी चिकित्सीय सगभर्ता का समापन करवाया जा सकता है।
इस प्रकार इन मामलो मे हम चिकित्सा का समापन करा सकते है।

(12) पक्षियो मे अंड परजीविता परजीविता का एक अच्छा उदा है।
जिसमे परजिवी अपने अण्डे को परपोषी के घोसले मे डाल देता है।
तथा परजीवी इस अडे को अपने अडे समझ सेने लगता है।
तथा परजीवि का अंडा परपोषी के अडे के समान आकार रंग साइज का होता है।
क्योकी कही परजीवी के अडे को परपोषी द्वारा पह्चान न लिया जाए।
इस प्रकार परजीवी परपोषी के अडे का पालता है।
और विकास की क्रिया के दौरान किसी रूप रंग मे परपोषी के अडे के आकार मे परिवर्तन होगा तो परजीवी मे भी होगा।

Visit CollegeDekho

section-B

(13) जब किसी खतरे उत्पन्न जातियों को उनके आवास प्राकृतीक स्थल से लेकर कहीं और भक्षण किया जाता है तो इसे बाह्यस्थानी संरक्षण कहते है।

1) जन्तु उधान :- जन्तु उधान मे सकट उत्पन्न जन्तुओ को संरक्षण द्वारा उनको रखा जाता है।

2) पादप उधान :- इसमे पादपों को रखा जाता है।

3) वन्य जीव सफारी पार्क :- इसमे जन्तु पादप जिनके जीवन मे सकंट उत्पन्न हो उनको रखा जाता है।

4) बीज बैंक :- बीच बैंक मे आज कल कई जीवो तथा पादप के वीर्य शुक्र तथा बीच को संरक्षीत रखा जाता है।

5) उत्तक सवर्धन :- उत्तक सवर्धन मे किसी भी विलुप्ती के कगार पर रहे पादप, जीवो को थोडा भाग लेकर पात्रे विधी द्वारा बहुत अधीक संख्या मे एक कोशिको के निर्माण से पूर्ण पादप का निर्माण किया जाता है।

इसके अलावा रेडियो जनेरियो हुई सम्मेलन मे भी विविध देशो ने शपत ली की वह जैविविधता की क्षती मे कमी लायेंगे।

Visit CollegeDekho

इस प्रकार दक्षिण अफ्रिका के मे 2002 मे विश्व के 190 देशो ने शामिल हुए थे जिन्होने शपथ ली की 2010 तक जैव विविधता की कमी को स्थानीक तथा प्रादेशिक स्तर पर कम करेगी।

(15) अपघटन :-

जटिल कार्बनिक पदार्थ मे अकार्बन पदार्थ जैसे कार्बन आक्सीजन, कार्बन डाई आकसाइड मे बदलने को अपघटन कहा जाता है। अपघटन मुख्य रूप मे पौधो के सडे पत्ती, मल मुत्री का किया जाता है।

1) खडन :- खडने जो केचुए, केचुआ के द्वारा बाह्य रूप से छोटे-छोटे भागो मे तोडा जाता है।

2) अपचयन :-

अपचयन मे जो पदार्थ कार्बनिक को अकार्बनिक सरल पदार्थो मे तोडा जाता है।

3) निक्षालन :- इसमे जल मे घुली पदार्थ जो वे वह मृदा मे चले जाते है. उसे निक्षालन कहा जाता है।

4) ह्युमिफिकेशन :- ह्युमस जो एक क्रिस्टल रहीत पदार्थ है जिसको प्रती सुक्ष्म जीवी द्वारा जल्दी परिवर्तीत नही होता है। अधीक समय मे तथा उच्च प्रतिरोधकता होती है।

Visit CollegeDekho

स्थानीकरण ः- दूसरे को जल मृदा मे भेजने को स्थानीकरण कहा जाता है।
तापमान ः- अधीक ताप अपघटन तीव्र
नीम्न ताप अपघटन धीमा
आद्रता ः- नमी अधीक अपघटन तीव्र
नमी नीम्न अपघटन धीमा
यदि काईटीन का पदार्थ का अपघटन धीमा नाइट्रोजन तथा सेलुलोज का अपघटन जल्दी होता है।

(15) यदि कोई व्यकित आनुवांशिक रोग के साथ पैदा होता है तो क्या इसकी उपचार के लिए कोई जीन चिकित्सा है।
जिन चिकित्सा का पहला पहल 1990 मे एक चार साल की लड़की पर किया गया
इसमे एडीनोसीन डीएमीनेज की कमी हो गई थी जीस कारण उसकी प्रतिरक्षा तंत्र मे कमी थी।
यह एन्जाइम (जीन जो प्रतिरक्षा तंत्र का काम करता है।
जीन की कमी इसका कारण है।
1) अस्थि मज्जा ः- इसमे व्यकित की शरिर मे एडीनोसीन दिया जाता है।
2) प्रतिरक्षा स्थानातरण ः- व्यकित की सूई की सहायता से ADA को शरिर मे

Visit CollegeDekho

मे स्थानान्तरण करवाया जाता है।
जीन चिकित्सा में व्यक्ति की शरिर से लसिकाणुओं को निकाला जाता है तथा पश्च विषाणु द्वारा उसको सक्रमित किया जाता
तथा शरिर के बाहर लसिकाणु का संवर्धन किया जाता है।
उसके बाद व्यक्ति की शरीर मे पहुचाया जाता है।
लेकिन अभी विधिया यह पूर्ण नाशक नही क्योंकी लसिकाणु प्राय मृत होते है।
ये विधी भ्रुणिय अवस्था मे कराने से ~~चमट~~ पूर्ण प्रभावि होगी।

(16) बायोगैस जिसमे मुख्य रूप से मैथेन गैस होती है।
यह मैथेनोजन बैकटीरिया के द्वारा उत्पन्न किया जाता है।
ये बैक्टिरिया सेलुलोज पदार्थ तथा किचड मे अवायविय रूप से पाये जाते है।
जब पशु के रुमेन मे भी मैथेनोजन बैकटीरिया पाया जाता है।
जो उसके भोजन का पाचन करता है।
गाय की गोबर को जब एक 15-10-15 फिट उची जमीन के अंदर टेंक मे डाला जाता है तथा उसके ऊपर एक ढक्कन लगाया

Visit CollegeDekho

जाता है तो यह बैक्टीरिया अपनी सक्रियता से गैस को उत्पन्न करते है।
इसमे एक पाइप लगी होती है
जो आस-पास के घरो मे लगाई जाती है
तथा उसकी इसका उपयोग भोजन बनाने मे तथा प्रकाश उत्पन्न करने मे किया जाता है।
बायोगैस के उत्पाद मे महत्व को भारतीय अनुसंधान संस्था तथा खादी ग्रामीण आयोग्य उद्योग ने महत्व दिया है।

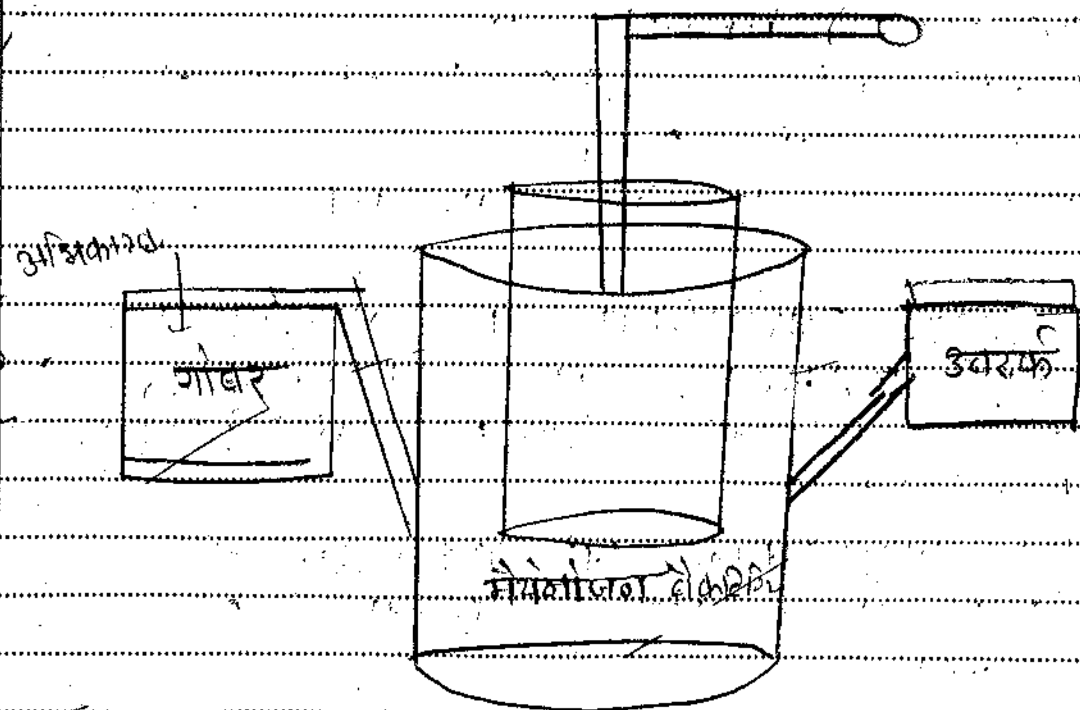

बायोगैस का चित्र बनाइए।

Visit CollegeDekho

(18) अनुकूली विकिरण जब किसी एक भूमौगोलीक क्षेत्र के एक बिन्दु से सुरी विकास को अलग-अलग भाग तक फैलने को अनुकूली विकिरण कहा जाता है।
उदा०- डार्विन की फिंच
डार्विन अपनी यात्रा के दौरान गलेगोस द्वीप पर गये थे।
जब उन्हे एक काली छोटी चिड़िया ने बहुत आश्चर्य चकित किया था मुख्या। उन्होंने देखा की एक ही द्विप के अलग विकसीत सभी फिन्ची मे उनके बीजभक्षी, शाक भक्षी के आधार पर इतनी विभिन्नता मिलती है।
जितनी भी उन्होने फिचो को देखा था वे सभी अपने भोजन के अनुसार फिन्ची मे परिवर्तन किया था
इस प्रकार आस्ट्रेलिया के मासूपिलय भी इसका उदाहरण जो भी एक ही पुर्वज के प्रभाव से विकसीत हुए थे।
अनेक मासूपिलयन जो एक-दूसरे से बिल्कुल हि भिन्न दिखाई दे रहे थे।
इस प्रकार एक ही बुद्ध से एक अलग-अलग क्षेत्रो तक के विकास को अभिसारी विकास कहा जाता है।

Visit CollegeDekho

ओसट्रेलिया की अपरास्तनी जन्तु भी इस प्रकार के विकास का उदाहरण है।
उनके अपरास्तनी जो की तस्मीनियाई वुल्फ इत्यादि मिलते जुलते थे बैंडीकूट, चिंटी परिता खौर, तस्मीनियाई वुल्फ, इत्यादि जो ओस्ट्रेलीया के भी जन्तु है।

(19) आनुवांशिक कूट की मुख्य विशेषता है।

1) प्रकूट त्रिकू होते है। 61 प्रकूट का समूह होता है। तीन प्रकूट जो कि रोध प्रकूट कहलाते है। अन्य 61 प्रकूट जो प्रोटिन का कूट लेखन करते है कूटलेखन रोध प्रकूट द्वारा नहीं किया जाता है।

2) एक प्रकूट केवल एक अमीनो अम्ल का कूट लेखन करते है अतः इन्हे हम विशिष्ट कहते है।

3) कुछ प्रकूटो द्वारा एक हि अमीनो अम्ल का कूट लेखन किया जाता है। अर्थात कुछ प्रकूट का एक से अधीक अमीनो अम्ल का कूट किया जाता है जिस कारण इन्हे अपह्रासित प्रकूट कहा जाता है।

Visit CollegeDekho

4) प्रकूट अमीनो अम्ल को लगातार पढ़ा जाते है अर्थात रुकती नही है।

5) प्रकुट सर्वभौमिक होती है अर्थात जीवाणु से लेकर मनुष्य तक UUU फेनिल एलेनिन का कुट लेखन करता है। केवल कुछ अपवाद जैसे सूत्रकणिका और प्रोटोजोआ को छोड़कर

6) AUG एक द्विरश कार्य करता है मैथीओनीन को जोड़ने का काम करता है तथा प्रारंभीक प्रकुट के रूप मे कार्य करता है।

7) UAA, UAG, UGA जो को रोध प्रकुट कहा जाता है। किसी प्रकार के अमीनो अम्ल का कुट लेखन नही करता है।

Visit CollegeDekho

Section C

(22) आवृत्तबीजी पादपों में बहिःप्रजनन की युक्तियाँ मुख्य हैं।
आवृत्तबीजी पुष्प जो उभयलिंगी पुष्प का धारण करते हैं।
उनमें हमेशा से ही स्वपरागण होता है।
जिस कारण स्वपरागण को रोकने के लिए पौधों द्वारा निम्न युक्तियाँ अपनाई गई है।
जिसमें कारण स्वपरागण बार - बार होने से उनकी सतती न कोई नया लक्षण आता है और यदी पुष्पों मे रोग हो तो वह सतती मे स्थानांतरण भी होता है।
जिस कारण इसे अंतःप्रजनन कहा जाता है।
स्वपरागण को हतोत्साही तथा परपरागण की प्रोत्साही करने हेतु ही पुष्पी पादपों ने बहिःप्रजनन की युक्तियां को अपनाया है।
जिसके परिणाम स्वरूप स्वपरागण नष्ट हो
कुल चार प्रकार की बहिःप्रजनन युक्तियाँ है।
(i) यदि कुछ पादपों ने परागकण के विमुक्ति तथा वर्तिकाग्र की ग्राहिता की समय को परिवर्तन किया है।
परागकण के परिपक्वता व झड़ने से पहले वर्तिकाग्र ग्राही बन चुकी होती है।

Visit CollegeDekho

18

अथवा वर्तिकाग्र के ग्रही बनने से पहले परागकण को अवमुक्त कर दिया जाता है।

(ii) इसमें परागकोष तथा वर्तिकाग्र ने अपनी स्थान में परिवर्तन किया है।
जिसके परिणाम स्वरूप परागकण वर्तिकाग्र के सपर्क में नही आ पाता है तथा वर्तिकाग्र परागकण के सपर्क मे नही आ जाता है।

(iii) असगजनन :- जिसमे वर्तिकाग्र तथा परागकण में रसायनिक तथा वैसाणुगत पर अधारित होता है।
जिस कारण उसी पादप का यदि पराग(कण) आता है तो उसकी वृद्धि को रोका जाता है। उभयलिंगी पादप → मक्का

(iv) यदि मादा पुष्प तथा नर पुष्प को अलग - अलग कर दिया जाता है।
अर्थात एकलिंगी पुष्प का निर्माण किया जाता है।
यह विधि स्वपराग तथा सजात पुष्पी परागण को रोकती है।
एकलिंगी पौधा → पपीता

इस प्रकार असगता केवल स्वपरागकण को रोकती है जबकी एक लिंगी पुष्प का निर्माण करने से दोनो हि को परागण को रोकने मे काम करता है

Visit CollegeDekho

25) बैकटिरिया मे अनुलेखन जिसमे बैक्टरिया के ऊपर निर्भर की वल एक हि एंजाइम है जिसमे हम RNA पोलीमरेज एंजाइम कहा जाता है।
यह एंजाइम जब DNA की एक स्थल जिसमे प्रारंभक कहा जाता है
से जाकर जुड़ता है तथा इसको जुड़ने के लिए एक अन्य कारक का उपयोग किया जाता है ~~सिग~~ जिसको सिग्मा कारक कहा जाता है।
जब यह बैकटिरिया की अनुलेखन मे DNA के प्रारम्भक स्थल उन्नायक से जुड़ जाता है तो अनुलेखन कि प्रक्रिया शुरु हो जाती है।
यह एंजाइम अनुलेखन करने लगता है।
तथा ट्राई फोस्फेट को क्रियाधार के रूप मे प्रयोग कर अभिक्रिया को पूरा करता है।
तथा पूरकता के नियम का अनुपालन करता है।
और इस तरह यह एंजाइम शिथिकरण करने लगता है।
तथा एंजाइम समापक के स्थल पर पहुंच जाता है।

Visit CollegeDekho

जब एंजाइम समापक स्थल पर पहुँच जाता है तो एक कारक का उपयोग किया जाता है। जिसे ρ कारक कहा जाता है। यह पॉलिमरेज को तथा नवनिर्मित RNA को अलग करने का काम करता है। अब नवनिर्मित RNA का निर्माण हो जाता है। इस प्रकार यह एंजाइम किस प्रकार समापक, प्रारंभिक तथा दीर्घीकरण तीनों मे महत्वपूर्ण भूमिका को निभाता है। और यह एंजाइम किस प्रकार तीनों प्रक्रिया को स्वयं करता है। वास्तव मे एक अन्य एंजाइम समापन कारक सिग्मा तथा ρ का उपयोग कर तीनों प्रक्रिया को पूर्ण करता है। जब RNA का निर्माण हो जाता है तो इसकी संसाधन तथा स्थानांतरण एक साथ शुरू हो जाता है। क्योंकि इनकी कोशिका तथा केन्द्रक मे विलगाव नहीं हो होता है।

अतः कई बार संसाधन की पूर्ण होने से पहले स्थानांतरण शुरू हो जाता है। तथा संसाधन तथा स्थानांतरण साथ-साथ भी होता है।

Visit CollegeDekho

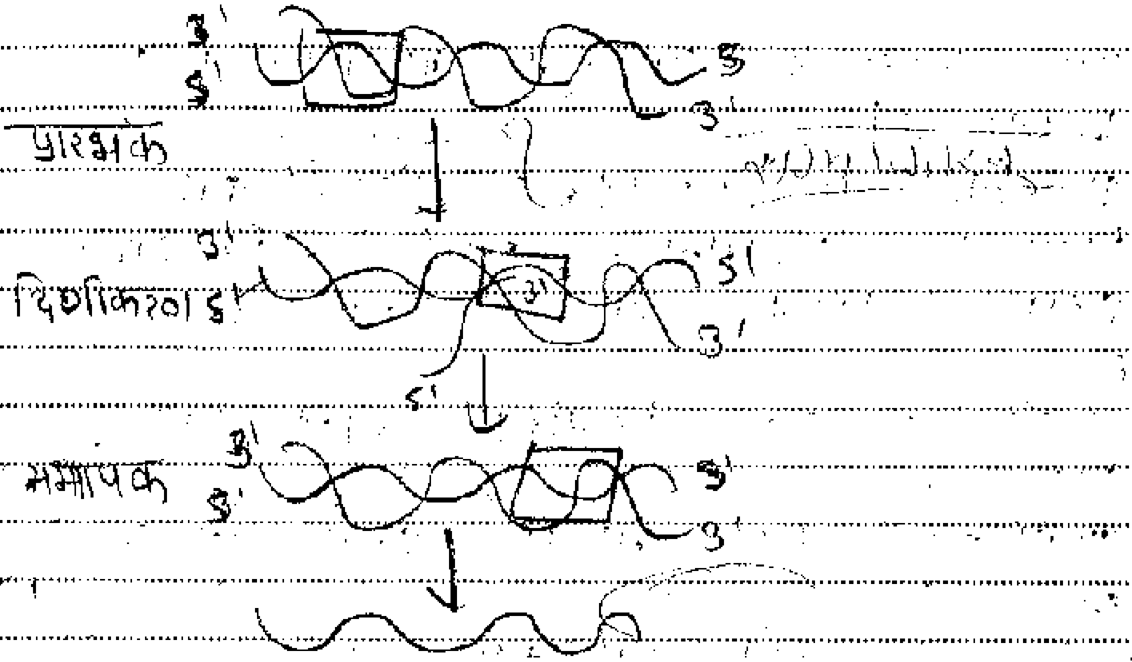

(ग) बायोरिएक्टर :-
संसाधन की अधिक मात्रा की प्राप्त करने के लिए बायोरिएक्टर के निर्माण की आवश्यकता थी
एक 100 से 1000 आयतन का होता है
बायोरिएक्टर एक बर्तन के समान कार्य करता है।
जहां पर जीवों, उतक, कोशिका की तथा जन्तु, प्राणी की कोशिका को संवर्धन में एंजाइम का उपयोग किया जाता है
बायोरिएक्टर के द्वारा संवर्धन की अधिक मात्रा को प्राप्त किया जाता है।
बायोरिएक्टर एक आवश्यक अनुकूलन परिस्थितिक उपलब्ध करता है।
बायोरिएक्टर के अंदर वृद्धि के लिए

Visit CollegeDekho

भी आवश्यक अनुकूल की प्रतिस्थती प्राप्त कराता है।
बायोरिक्टर में आवश्यक पदार्थ, PH क्रियाधर, तापमान, हार्मोन, विटामीन इत्यादि पहले से उपलब्ध होता है।
बायोरिएक्टर एक विलोडक प्रकार का होता है।
बायोरिक्टर का आधार धुमावदार होता है।
बायोरिक्टर प्राय गोलाकार होता है।
बायोरिक्टर की अंदर उत्पाद के क्या संवर्धन की मात्रा को हिलाने हेतु विलोडक का उपयोग किया जाता है।
बायोरिक्टर की अंदर भी आक्सीजन प्रधान करने वाला तंत्र होता है।
यदि बायोरिक्टर की संरचना को ध्यान से देखा जाए तो इसमे आक्सीजन प्रधान तंत्र पाया जाता है।
बायोरिक्टर एक हवा नियंत्रण तंत्र पाया जाता है।
बायोरिक्टर की अंदर PH नियंत्रण तंत्र पाया जाता है।
बायोरियक्टर की अंदर फोन को नियंत्रण करने वाला तंत्र भी पाया जाता है।
इस प्रकार बायोरिक्टर से उत्पाद की अधीक मात्रा की उत्पादन किया जाता है।

Visit CollegeDekho

अम्ल प्रधान समाधान जीसमे बायोरिक्टर की द्वारा प्राप्त उत्पाद की मात्रा को लिया जाता है।
इस उत्पाद को पहले अशुद्धि से संदूषण रहित वातावरण में रखा जाता है।
उसके बाद इसको ड्रायल के लिए भेजा जाता है।
तथा उसमें एक कैमीकल मिलाया जाता है।
जो उसके खराब होने के दर को कम कर देता है।
उसके बाद उसको भेज दिया जाता है।

बायोरिएक्टर

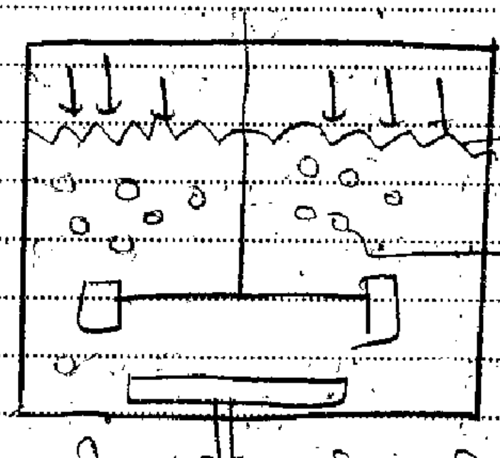

(23) एक भ्रूणमक की निर्माण की प्रक्रिया भ्रूणीय अवस्था में गुरुतात होती है।
जो की नर के जनन की शुक्राणु निर्माण से बिल्कुल अलग होता है।
यह भ्रूण के अण्डाशय में करोडो मातृ अण्डजनन की कोशिका का निर्माण होता है।

Visit CollegeDekho

जो की जन्म की बाद नही होता है।
इसके बाद इनमे विभाजन शुरू हो जाता है।
ये अधसूत्री विभाजन की वृद्धि अवरूद्ध हो जाती है।
जिस कारण इसे प्राथमीक अण्डके कहा जाता है।
ये प्राथमीक अण्डके की चारो तरफ एक कणिका कोशिका का निमार्ण होता है जिसे हम प्राथमीक पुरक कहते है।
प्राथमिक पुरक की जन्म से यौनआरंभ के तक ह्रास होता है।
तथा इनकी सख्या 60 से 80 हजार जितना बचता है।
इस प्राथमिक पुर के चारो तरफ एक और कणिका ~~एक~~ कोशिका का निमार्ण होता है
तथा एक प्रावाकर सेल का निमार्ण होता है।
जिसे द्वितियक पुरक कहा जाता है।
तथा द्वितियक पुरक जल्द तितयक पुरक मे वृद्धि करता है।
जिसके चारो तरफ प्रावाकर की अतः प्रावाकर तथा बाह्य प्रावाकर का निमार्ण होता है
इसे तृतीयक पुरक कहते है।
जब इसी समय इसमे एक प्राथमीक पुरक मे वृद्धि होती है।

Supplementary/પુરવણી

04(S) - M - 24

વિષય	Biology
તારીખ	15/03/2023

★ અહીંથી જ લખવાનું શરૂ કરવું. ★

વિભાગ..................

1

પ્રશ્ન ક્રમાંક

तथा वह एक अ विभाजन के फलस्वरूप
~~क~~ एक द्वितियक अडके का निर्माण होता
है। तथा एक प्राथमिक ध्रुविय पीड
का नीमार्ण होता है।
इस ध्रुविय पीड का तो ह्रास हो
जाता है।
द्वितियक अडके के चारो तरफ एक
जोना पेलुसिडा आवरण का निर्माण
होता है।
तथा तृतियक पुटक एक पूर्ण ग्राफिक पुटक
मे वृद्धि कर लेता है।
इसके बाद द्वितियक अडके मे अडोत्सर्ग
होता है। तथा अडाणु का उत्सर्जन
होता है। इस प्रकिया को अडजनन
कहा जाता है।

Visit CollegeDekho

વિભાગ..................

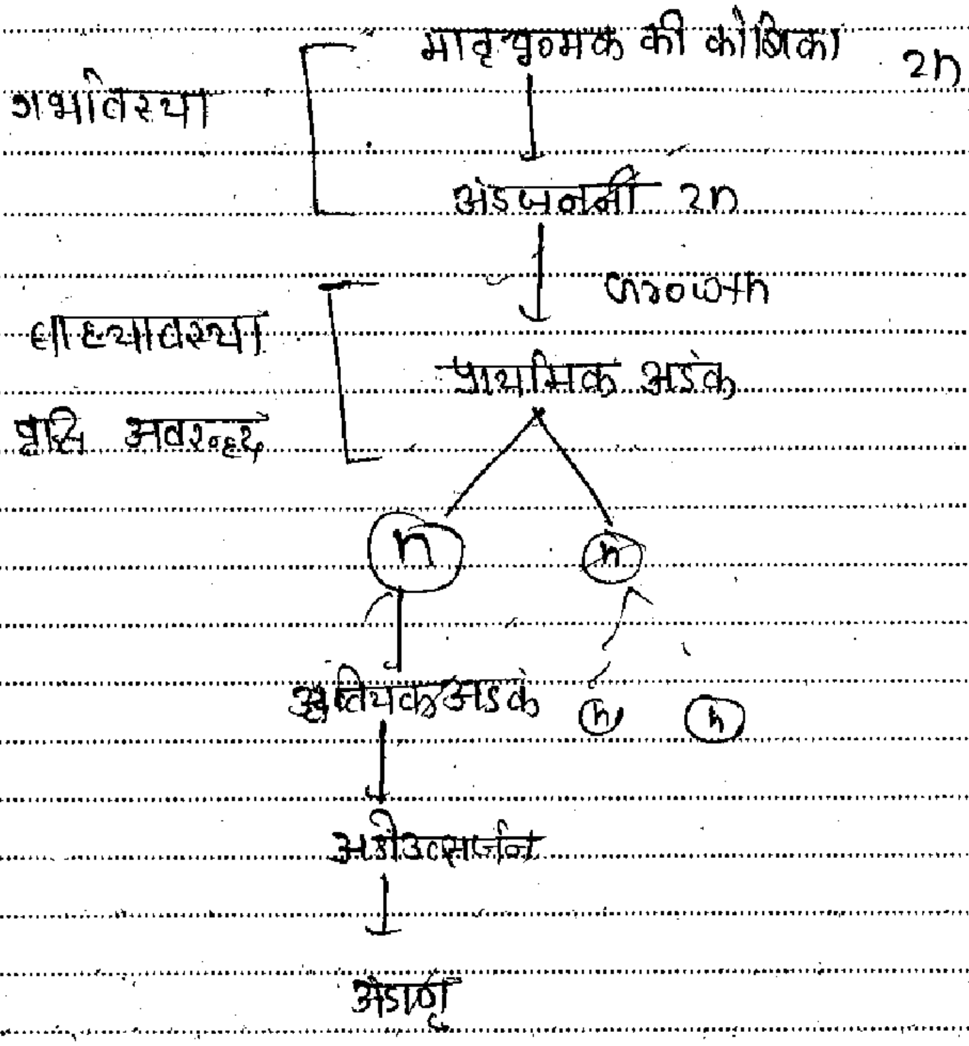

Visit CollegeDekho